26-06-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – तुमने ईश्वर की गोद ली है मनुष्य से देवता बनने के लिए, उनकी श्रीमत ही तुम्हें मनुष्य से देवता बना देती है''

प्रश्नः- आप मुये मर गई दुनिया – इसका अर्थ क्या है?

उत्तर:- आप बच्चे जब बाप के पास जीते जी मरते हो तो सारी दुनिया ही खत्म हो जाती है। दूसरे मनुष्य तो जिस दुनिया में मरते हैं उसी दुनिया में जन्म लेते, लेकिन तुम्हारा जन्म फिर इस पुरानी दुनिया में नहीं होता। नया जन्म नई दुनिया में होता है। तुम बच्चों को स्वर्ग की बादशाही मिल जाती है।

गीतः- मरना तेरी गली में.....

धारणा के लिए मुख्य सारः

1) मम्मा-बाबा को फालो कर सूर्यवंशी में आना है। अपनी मत पर नहीं चलना है। श्रीमत से ऊँच देव पद पाना है।

2) हम बाबा के ही होकर रहेंगे – इसी निश्चय में रहना है। कभी किसी बात में संशय नहीं उठाना है।

वरदानः- बाप के हर डायरेक्शन वा कायदे से फ़ायदा लेने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम भव

कहा जाता – जितना कायदा उतना फायदा, इसलिए अमृतवेले से जो भी कायदे बने हैं उनसे कभी किनारा नहीं करो। पढ़ाई, अमृतवेला, सेवा जो भी दिनचर्या बनी हुई है, उसमें मन नहीं भी लगे तो भी दिनचर्या में कुछ मिस नहीं करो। जैसे भक्त लोग नियम का पालन जरूर करते हैं, मन्दिर में मन नहीं भी लगे तो भी जायेंगे जरूर। आप तो स्वयं ला-मेकर्स हो, इसी अनुभव से हर नियम का पालन करते चलो तो मर्यादा पुरुषोत्तम बन जायेंगे।

स्लोगनः- जिनके पास सन्तुष्टता का विशेष गुण है उनके पास सर्व गुण स्वतः आते जायेंगे।

27-06-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम सच्चे-सच्चे रूहानी ब्राह्मण नई दुनिया की स्थापना के निमित्त हो, तुम्हें अपना अश्व (शरीर) इस यज्ञ में स्वाहा करना है"

प्रश्नः- अवस्था को स्थाई (एकरस) अचल बनाने का साधन क्या है?

उत्तरः- अवस्था स्थाई तब बनेगी जब निरन्तर योग में रहेंगे। योग टूटता तब है जब किसी में ममत्व है, इसलिए नष्टोमोहा बनो। बुद्धि को पवित्र बनाओ। ज्ञान की धारणा भी पवित्र बुद्धि में ही होती है, इसलिए बुद्धि रूपी बर्तन स्वच्छ हो, बाप से योग जुटा रहे।

गीतः- यही बहार है...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) योग अग्नि से विकर्मों की खाद भस्म कर गोरा बनना है। पवित्र बन सभी पर पवित्रता की ब्लिस करनी है।

2) स्वयं को ऐसा अचलघर बनाना है जो कोई भी विकर्म न हो। याद की मेहनत से अपनी अवस्था परिपक्व बनानी है।

वरदानः- स्वयं को अवतरित हुए अवतार समझ सदा ऊँची स्थिति में रहने वाले अर्श निवासी फरिश्ता भव

जैसे बाप अवतरित हुए हैं ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें भी ऊपर से नीचे मैसेज देने के लिए अवतरित हुए हो, रहने वाले सूक्ष्मवतन वा मूलवतन के हो। देह-भान रूपी मिट्टी अथवा पृथ्वी पर आपके बुद्धि रूपी पाँव नहीं पड़ सकते इसलिए फरिश्तों के पाँव सदा फर्श से ऊपर दिखाते हैं। तो आप सब ऊँची स्थिति में स्थित रहने वाले अर्श निवासी अवतरित हुए अवतार हो, इसी स्मृति से उड़ती कला में उड़ते रहो।

स्लोगनः- स्व-परिवर्तन के तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को ही बाप के दुआओं की मुबारक मिलती है।

28-06-23 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

''मीठे बच्चे – अब पुण्य आत्मा बनने के लिए परम शिक्षक की शिक्षाओं को धारण करो, पाप कर्मों के खाते को योग द्वारा चुक्तू करो''

प्रश्नः- मोस्ट बिलवेड बाप में भी कई बच्चों को कभी-कभी संशय उठ जाता है – क्यों और कब?

उत्तरः- बच्चे जब किसी की बातों में आ जाते, संगदोष में आने से ही संशय उठता है। यहाँ से बाहर गये तो यहाँ की यहाँ रही। ऐसा भूल जाते जो अपनी खुश-ख़ैराफ़त का समाचार भी नहीं देते। क्लास में भी नहीं जाते, मुरली भी नहीं पढ़ते, इसलिए बाबा कहते – बच्चे, इस संगदोष से बहुत सावधान रहना। कभी भी किसी की बातों में नहीं आना।

गीतः- इस पाप की दुनिया से...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) स्वीट होम में जाने के लिए बहुत-बहुत स्वीट बनना है। कभी भी संगदोष में आकर बाप को भूलना नहीं है। संशय नहीं उठाना है।

2) अन्तिम विनाश की सीन देखने के लिए पक्का ब्राह्मण, सर्विसएबुल बनना है। बाप का बनकर बाप की बदनामी नहीं करानी है।

वरदानः- दिव्य बुद्धि और रूहानी दृष्टि के वरदान द्वारा नम्बर वन लेने वाले श्रेष्ठ पुरुषार्थी भव

हर एक ब्राह्मण बच्चे को दिव्य बुद्धि और रूहानी दृष्टि का वरदान जन्म से ही प्राप्त होता है। यह वरदान ही ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है। इन्हीं दोनों बातों के आधार पर संगमयुगी पुरुषार्थियों का नम्बर बनता है। इन्हें हर संकल्प, बोल और कर्म में जो जितना यूज़ करता है उतना ही नम्बर आगे लेता है। रूहानी दृष्टि से वृत्ति और कृति स्वत: बदल जाती है। दिव्य बुद्धि द्वारा यथार्थ निर्णय करने से स्वयं, सेवा, संबंध-सम्पर्क यथार्थ शक्तिशाली बन जाता है।

स्लोगनः- फीचर्स में रूहानियत की झलक तब आयेगी जब संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता की धारणा होगी।

"मीठे बच्चे – ईश्वरीय बचपन को भूल ऊँचे ते ऊँचा वर्सा गँवा नहीं देना, फुल पास होंगे तो सूर्यवंशी घराने में राज्य मिलेगा"

प्रश्न:- सतयुग और त्रेता में किसी भी आत्मा को अपने कर्म नहीं कूटने पड़ते – क्यों?

उत्तर:- क्योंकि सतयुग-त्रेता में जो भी आत्मायें आती हैं वह संगम की ही प्रालब्ध भोगती हैं, उन्होंने संगम पर बाप द्वारा ऐसे कर्म सीखे हैं तो 21 जन्म तक उन्हें कोई कर्म कूटना न पड़े। अभी बाप ऐसे कर्म सिखलाते हैं जिससे आत्मा कर्मातीत बन जाती है। फिर किसी भी कर्म का फल दु:ख नहीं भोगना पड़ता है।

गीत:- बचपन के दिन भुला न देना...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) 8 घण्टा पाण्डव गवर्मेन्ट की मदद जरूर करनी है। याद में रह विश्व को पावन बनाने की सेवा करनी है।

2) कभी कोई उल्टा कर्म करके सतगुरू की निंदा नहीं करानी है। मम्मा-बाबा जैसा पुरुषार्थ कर सूर्यवंशी राजाई लेनी है।

वरदान:- दिव्य बुद्धि के वाहन द्वारा तीनों लोकों की सैर करने वाले ज्ञान स्वरूप विद्यापति भव

दिव्य बुद्धि अर्थात् होलीहंस बुद्धि। हंस अर्थात् क्षीर और नीर को, मोती और पत्थर को पहचान मोती ग्रहण करने वाले, इसलिए होलीहंस संगमयुगी ज्ञान स्वरूप विद्या देवी, सरस्वती का वाहन है। आप सभी ज्ञान स्वरूप हो इसलिए विद्यापति या विद्या देवी हो। यह वाहन दिव्य बुद्धि की निशानी है। इस दिव्य बुद्धि के वाहन द्वारा आप तीनों लोकों का सैर करते हो। यह वाहन सभी वाहन से तीव्रगति वाला है।

स्लोगन:- अपनी सर्व शक्तियों को अन्य आत्माओं के प्रति विल करना ही सर्व श्रेष्ठ सेवा है।

''मीठे बच्चे – इस पुरानी दुनिया, पुराने माण्डवे से अब दिल हटा लो, तुम्हें बाप के पास वापस जाना है, इसलिए घर को याद करो''

प्रश्न:- अपनी अवस्था अच्छी बनाने के लिए किस बात का बहुत-बहुत ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर:- भोजन का। सेन्सीबुल बच्चे अपने हाथ से योग में रहकर भोजन बनायेंगे और खायेंगे। अगर कोई बाबा को याद कर, प्रेम से बैठ भोजन बनाये और खाये तो अवस्था बहुत अच्छी हो सकती है। बाबा की याद में भोजन बनायेंगे तो बाबा भी वासना लेंगे। सर्विसएबुल बच्चों को बहुत फुर्त बनना चाहिए। हर प्रकार की सेवा अपने हाथ से करनी है।

गीत:- मुझको सहारा देने वाले...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अपने आपसे वा पारलौकिक बाप से बातें कर विचार सागर मंथन में बुद्धि को बिजी रखना है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।

2) अभी हम वापिस घर जा रहे हैं, यह शोक वाटिका है, इससे ममत्व मिटा देना है। नई दुनिया से अपनी दिल लगानी है।

वरदान:- दिलाराम बाप की याद द्वारा तीनों कालों को अच्छा बनाने वाले इच्छा मुक्त भव

जिन बच्चों की दिल में एक दिलाराम बाप की याद है वह सदा वाह-वाह के गीत गाते रहते हैं, उनके मन से स्वप्न में भी ''हाय'' शब्द नहीं निकल सकता क्योंकि जो हुआ वह भी वाह, जो हो रहा है वह भी वाह और जो होना है वह भी वाह। तीनों ही काल वाह-वाह है अर्थात् अच्छे ते अच्छा है। जहाँ सब अच्छा है वहाँ कोई इच्छा उत्पन्न नहीं हो सकती क्योंकि अच्छा तब कहेंगे जब सब प्राप्तियाँ हैं। प्राप्ति सम्पन्न बनना ही इच्छा मुक्त बनना है।

स्लोगन:- संस्कारों को ऐसा शीतल बना लो जो जोश वा रोब के संस्कार इमर्ज ही न हों।

''मीठे बच्चे – तुम्हें अपने ही तन-मन-धन से भारत को पावन बनाने की सर्विस करनी है, इस भारत को माया रावण से लिबरेट करना है''

प्रश्नः- जो बच्चे देही-अभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते हैं वह किस फिक्र से छूट जाते हैं?

उत्तरः- इस पुराने शरीर का कर्मभोग जो घड़ी-घड़ी भोगना के रूप में आता है, हिसाब-किताब चुक्तू करना पड़ता है, इसकी फिक्र से वह छूट जाते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि में रहता – अभी तो हमें पुराने हिसाब-किताब चुक्तू कर कर्मातीत बनना है। फिर आधाकल्प के लिए किसी भी प्रकार का रोग हमारे पास आ नहीं सकता। बाबा ऐसी फर्स्टक्लास नेचर-क्योर करते हैं जो बीमारी का नाम-निशान नहीं रहता।

गीतः- तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) भारत को आबाद करने में अपना तन-मन-धन सब सफल करना है। बहुत-बहुत मीठे बन सेवा करनी है। सचखण्ड स्थापन करने के लिए सच्चा बनना है।

2) विजय माला में पिरोने लिए याद की रेस करनी है। चलते-फिरते कार्य करते बाप-टीचर-सतगुरू को याद करना है।

वरदानः- त्याग और तपस्या के सहयोग से सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले निरन्तर तपस्वीमूर्त भव

सेवाधारी अर्थात् त्याग और तपस्वीमूर्त। त्याग और तपस्या दोनों के सहयोग से सेवा में सदा सफलता मिलती है। तपस्या है ही एक बाप दूसरा न कोई, यही निरन्तर की तपस्या करते रहो तो आपका सेवास्थान तपस्याकुण्ड बन जायेगा। ऐसा तपस्याकुण्ड बनाओ तो परवाने आपेही आयेंगे। मन्सा सेवा से शक्तिशाली आत्मायें प्रत्यक्ष होंगी। अभी मन्सा द्वारा धरनी का परिवर्तन करो – यही विधि है वृद्धि करने की।

स्लोगनः- नम्रता और धैर्यता की शक्ति से क्रोधाग्नि को शान्त बना दो।

"ब्रह्मा बाप के और दो कदम – फ़रमानबरदार-वफ़ादार"

❖ आज बापदादा चारों ओर के स्नेही और सहयोगी बच्चों को और शक्तिशाली समान बच्चों को देख रहे हैं। स्नेही सभी बच्चे हैं लेकिन शक्तिशाली यथाशक्ति हैं। स्नेही बच्चों को स्नेह का रिटर्न पद्म गुणा स्नेह और सहयोग प्राप्त होता है। शक्तिशाली समान बच्चों को सदा सहज विजयी भव का रिटर्न मिलता है।

❖ ब्रह्मा बाप नम्बरवन क्यों बना? दो कदम पहले सुनाये ना! तीसरा – सदा बाप, शिक्षक और सद्गुरु के फ़रमानबरदार बनें। हर फ़रमान को जी हाज़िर किया। बाप का फ़रमान है सदा सर्व खजानों के वर्से में सम्पन्न बनना और बनाना। तो प्रत्यक्ष देखा कि सर्व खजाने – ज्ञान, शक्तियाँ, गुण, श्रेष्ठ समय, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना पहले दिन से लेकर लास्ट दिन तक कार्य में लगाया।

❖ तो चेक करो – स्थिति में, सेवा में, कर्म अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में, (सम्बन्ध और सम्पर्क में आना ही कर्म है) तीनों में सदा फॉलो फादर हैं? हर फ़रमान सिर्फ बुद्धि तक रहता है या कर्म में भी आता है?

❖ चौथा कदम है – वफ़ादार। कभी भी मन से, बुद्धि से, संकल्प से बाप के बेवफ़ा नहीं बनना। वफ़ादार का अर्थ ही है सदा एक बाप, दूसरा न कोई। संकल्प में भी देह, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ वा देहधारी व्यक्ति आकर्षित नहीं करें।

वरदान:- साक्षीपन की स्थिति द्वारा हीरो पार्ट बजाने वाले सहज पुरुषार्थी भव

साक्षीपन की स्थिति ड्रामा के अन्दर हीरो पार्ट बजाने में सहयोगी बनती है। अगर साक्षीपन नहीं तो हीरो पार्ट बजा नहीं सकते। साक्षीपन अर्थात् देह से न्यारे, आत्मा मालिकपन की स्टेज पर स्थित रहे। देह से भी साक्षी, मालिक। इस देह से कर्म कराने वाली, ऐसी साक्षी स्थिति ही सहज पुरुषार्थ का अनुभव कराती है क्योंकि इस स्थिति में किसी भी प्रकार का विघ्न या मुश्किलात नहीं आ सकती, यह है मूल अभ्यास। इसी अभ्यास से लास्ट में विजयी बनेंगे।

स्लोगन:- फरिश्ता बनना है तो अपने सर्व रिश्ते एक प्रभू के साथ जोड़ लो।